सियार और मोर

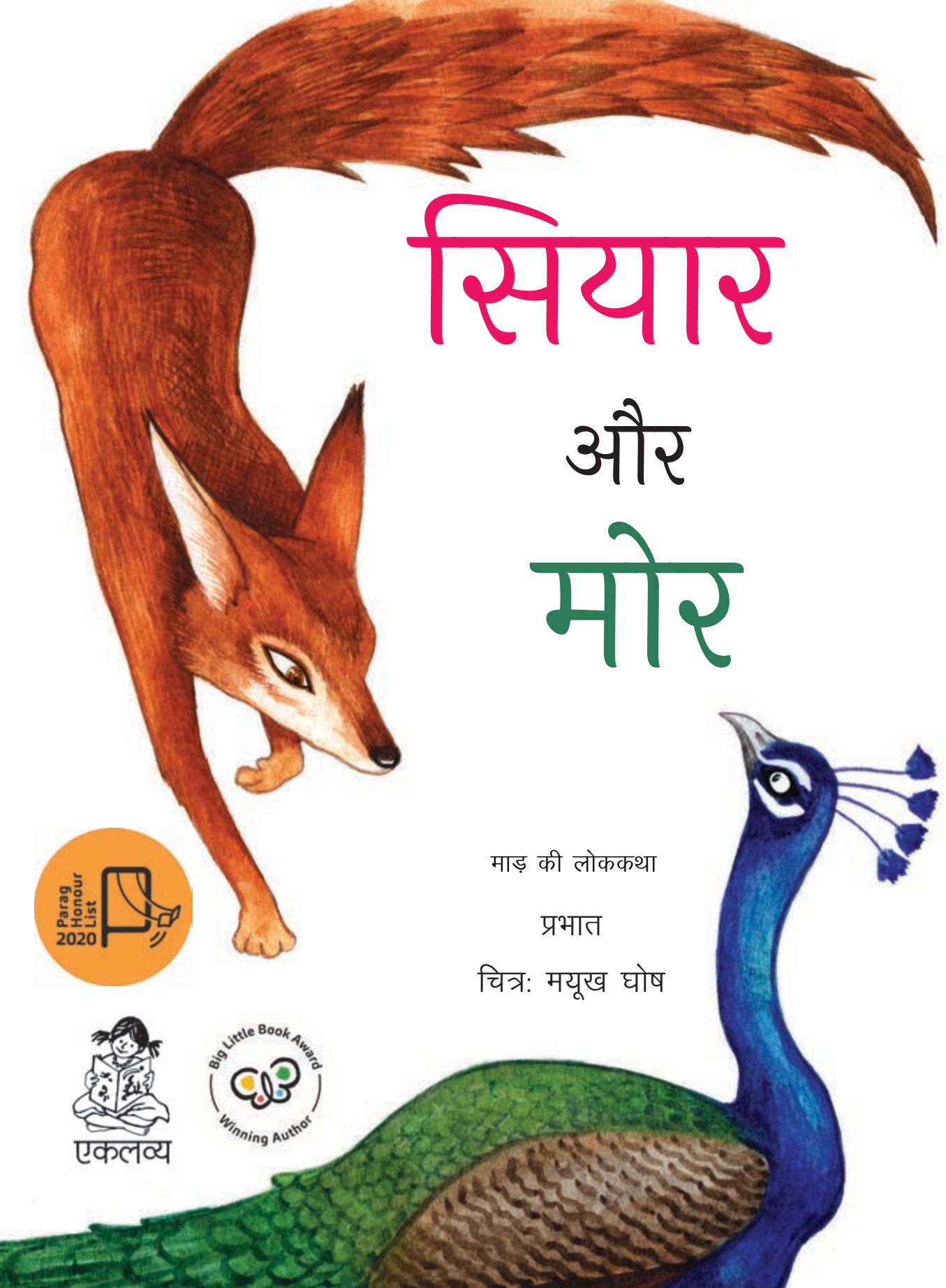

माड़ की लोककथा

प्रभात

चित्र: मयूख घोष

Parag Honour List 2020

Big Little Book Award Winning Author

एकलव्य

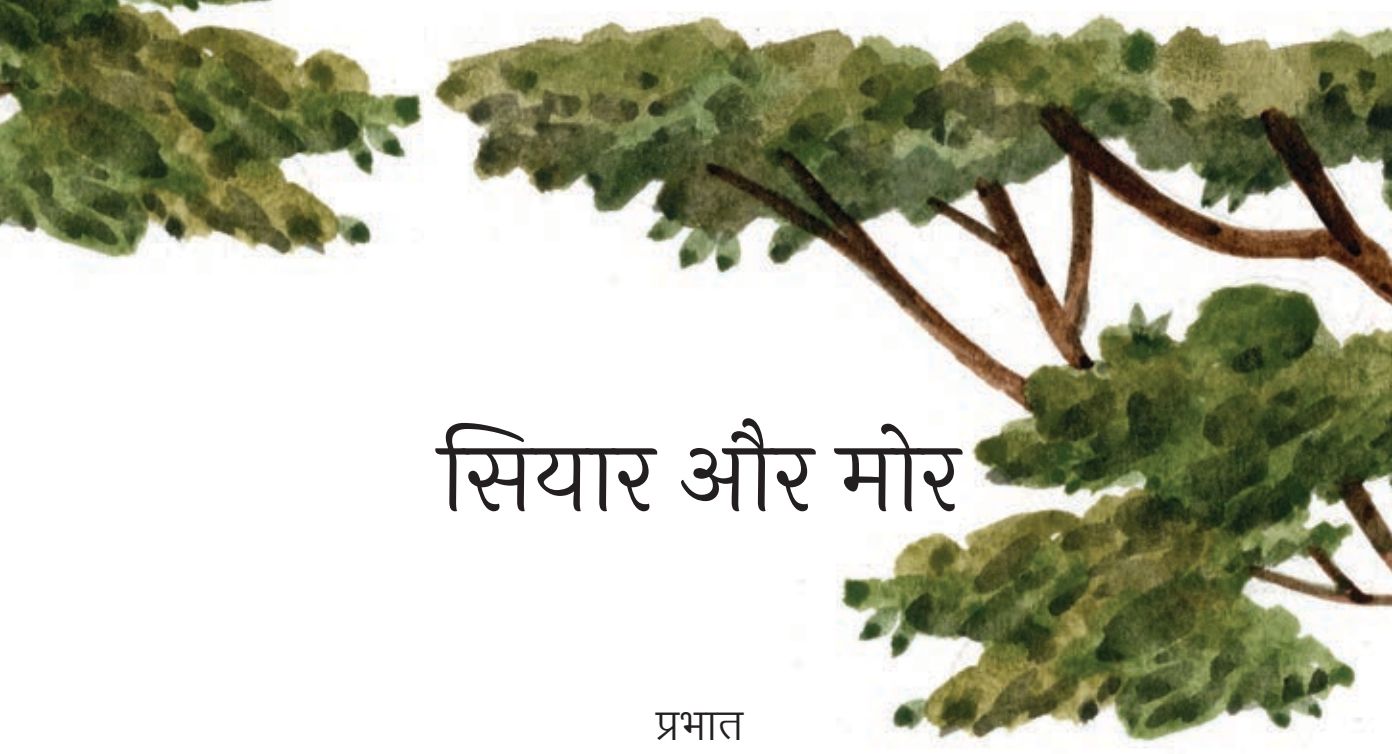

सियार और मोर

प्रभात

चित्र: मयूख घोष

एकलव्य

सियार और मोर
SIYAR AUR MOR

पुनर्लेखन: प्रभात
चित्र: मयूख घोष
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादकीय सहयोग: सीमा, दीपाली शुक्ला और अपूर्वा राजे

प्रभात, जनवरी 2019
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

© चित्र: मयूख घोष, जनवरी 2019

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करण: जनवरी 2019 / 2000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2019 / 3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2021 / 3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: जून 2022 / 5000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2023 / 5000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-85236-80-8
मूल्य: ₹ 60.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 - 297 7770, 71, 72, 73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन +91 755 258 7551

सियार और मोर कल ही तो दोस्त बने थे और आज की यह बात है। सियार ने मोर से कहा – “बड़ी भूख लगी है। आज कुछ खास बनाकर खाते हैं।”

“खास तो दाल-बाटी होती है। बनाकर खा लेते हैं।” मोर ने कहा।

सियार को बात जम गई। दोनों ने जंगल में इधर-उधर से ईंधन बटोरा। पत्थर का चूल्हा बनाया। बरतन, आटा, दाल जैसी ज़रूरी चीज़ें ले आए। चूल्हा जलाकर भगोनी भरकर दाल चढ़ा दी। आग की राख में गिनकर पूरी बारह बाटी दबा दीं। बड़ी जल्दी उन्होंने खाना तैयार कर लिया। अब तो बस खाने की ही देर थी। खा भी लेते पर मोर ने टोक लगा दी। बोला – “मैं नहाए बिना नहीं खाता हूँ। अभी नदी पर नहाकर आता हूँ। ये गया और ये आया।” कहने के बाद वह सियार के जवाब का इन्तज़ार किए बिना नहाने चला गया।

इधर जंगल में पेड़ों से आती हवाओं के बीच दाल-बाटी की खुशबू उड़ रही थी। सियार के सामने चकाचक तर माल रखा हुआ था। उससे रहा नहीं गया। उसने मन ही मन विचार किया – 'अब जो बने हुए खाने को छोड़कर नहाने गया है, उसके जल्दी आने का क्या ठिकाना है? बेवजह भूखे रहने का फायदा ही क्या है? क्यों न माल उड़ा ही लिया जाए। खाना खा ही लिया जाए।' ऐसा सोचने के बाद खाने में क्या देर लगती है। सियार ने एक बाटी खाई, दो खाई, चार खाई, छह खाई। पेट भर गया पर नीयत नहीं भरी। वह पूरी बारह बाटी खा गया और कटोरा भर दाल को भी अकेला ही चढ़ा गया। इतना खाने के बाद उसका पेट फूलकर कुप्पा हो गया। हो गया तो हो जाने दो, ऐसा सोचते हुए वो वहीं छाया देखकर सो गया।

मोर आया तो देखा कि यहाँ तो आलम ही दूसरा है। दाल की भगोनी खाली पड़ी है। बिखरी हुई राख पड़ी है। बाटियों का कहीं नामोनिशान नहीं है। यह देख-देखकर उसका खून उबल रहा था और चेहरे पर घोर आपत्ति के भाव थे। उसने कड़कती आवाज़ में सियार को जगाया – "सियार! दाल-बाटी कहाँ है?"

"चिल्लाता क्यों है? भूख लग रही थी तो मैं दाल-बाटी खा गया।" आँखों पर हाथ धरे सोए पड़े सियार ने कहा।

मोर का जो खून अभी तक उबल ही रहा था अब शरीर में भड़भड़ाता दौड़ने लगा। चीखते हुए बोला – "ऐसे कैसे खा गया तू। हमने मिलकर बनाई थी तो खाना भी मिलकर ही था। और खा भी गया तो कोई बात नहीं पर मेरा हिस्सा तो छोड़ना था।"

"ऐसा करता हूँ मैं तुझे भी खा जाता हूँ। फिर न तुझे भूख लगेगी न तू चीख-चीखकर हिस्सा माँगेगा।"

सियार की बात सुनकर मोर के तो होश उड़ गए। बोला – "ऐऽऽऽ दुबारा ऐसी बात मुँह से निकाली तो...।"

मोर अपनी बात पूरी करता इससे पहले ही सियार झपट्टा मारकर मोर को खा गया। असल में वो उसे साबुत ही निगल गया। उसका पेट फूलकर तूँबे की तरह हो गया था। अब उसकी आँखों में नींद कहाँ और नसों में आराम कहाँ। अब तो वो पूरा जंगली बन चुका था। वह उस जगह से आगे बढ़ गया।

कुछ ही दूर चला था कि उसे जंगल में उपले बीनती एक बुढ़िया दिखाई दी। सियार ने दूर से ही बुढ़िया को डपटते हुए कहा – "ऐ बुढ़िया, हट जा मेरे रास्ते से।"

बुढ़िया बोली – "चला जा नहीं तो टोकरी फेंककर मारूँगी अभी, तो फिर जाएगा पेंअ् पेंअ् करता। बड़ा आया रास्ते से हटाने वाला।"

सियार और भी निडर होकर बोला – "बुढ़िया तू अभी जानती नहीं है कि मैं कौन हूँ!"

"खूब जानती हूँ तुझे और तेरे जैसों को। शाम पड़े हुआँ-हुआँ रोने वाला गेदुआ ही तो है तू।"

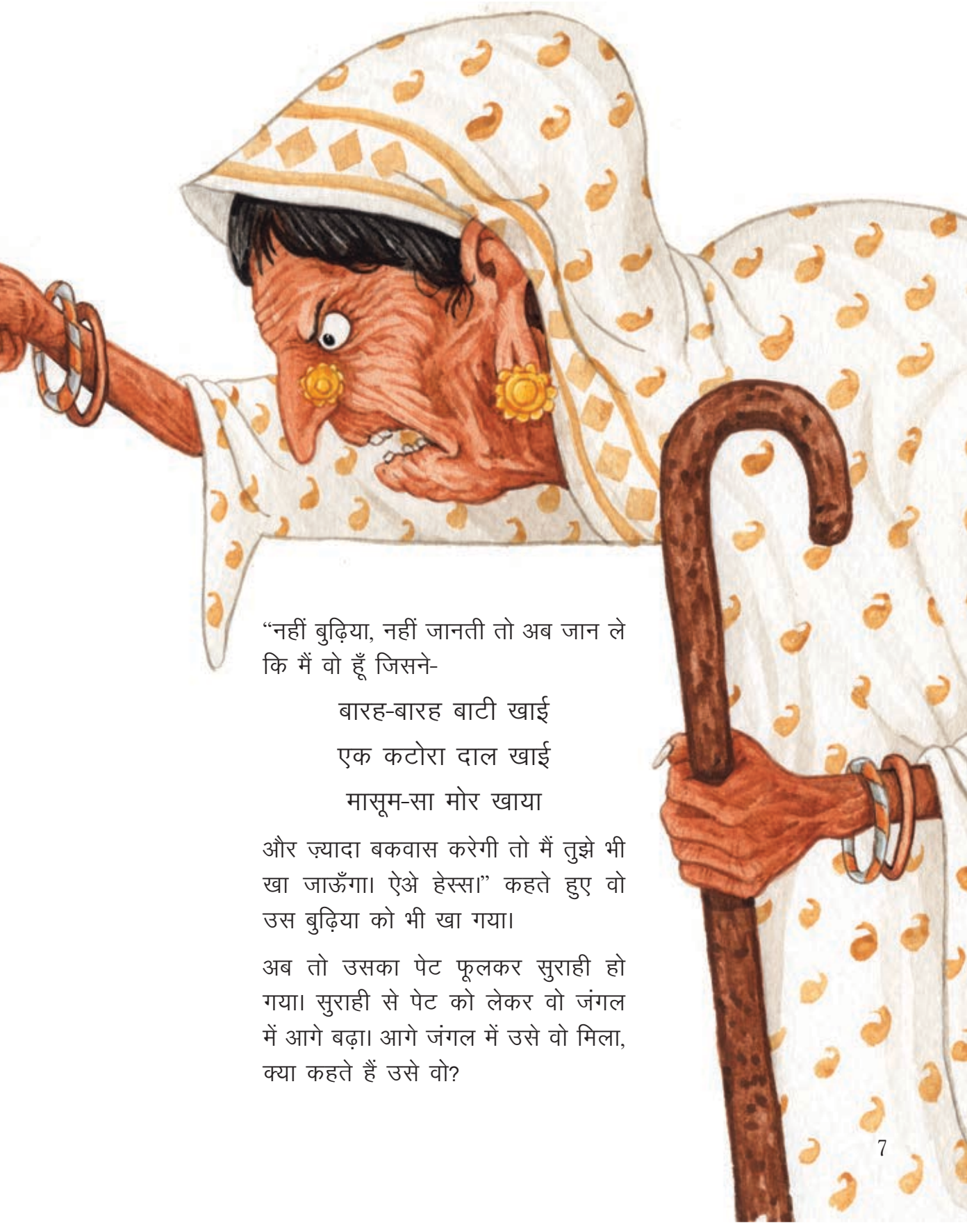

"नहीं बुढ़िया, नहीं जानती तो अब जान ले कि मैं वो हूँ जिसने-

बारह-बारह बाटी खाई

एक कटोरा दाल खाई

मासूम-सा मोर खाया

और ज़्यादा बकवास करेगी तो मैं तुझे भी खा जाऊँगा। ऐअे हेस्स।" कहते हुए वो उस बुढ़िया को भी खा गया।

अब तो उसका पेट फूलकर सुराही हो गया। सुराही से पेट को लेकर वो जंगल में आगे बढ़ा। आगे जंगल में उसे वो मिला, क्या कहते हैं उसे वो?

"गाय का बछड़ा।"

"हाँआऽऽऽ, उसे एक गाय का बछड़ा मिला।" और बछड़े को देखते ही वह बोला –

"ऐ बछड़ा

तेरे मन में होगा तू तगड़ा।

हट जा मेरे रास्ते से।"

बछड़े ने विनम्रता से कहा – "भाई साहब मैं आपके रास्ते में कहाँ हूँ। मैं तो घास के मैदान में घास चर रहा हूँ।"

सियार ने कहा – "शायद अभी तुझे पता नहीं है कि मैं कौन हूँ!"

बछड़े ने कहा – "अच्छी तरह पता है भाई साहब। आप गीदड़ हैं, महाडरपोक। आपके महाडरपोक स्वभाव से गीदड़ भभकी मुहावरा बना है। और हाँ, आप रोज़ शाम को हुआँ-हुआँ करके रोते हो।"

सियार ने आँखें दिखाकर कहा – “अगर नहीं जानता तो जान ले कि मैं वो हूँ जिसने-

बारह-बारह बाटी खाई
एक कटोरा दाल खाई
मासूम-सा मोर खाया
उपले बीनती बुढ़िया खाई

और अब मेरा ऐसा खयाल है कि बछड़े तो होते ही नहीं अच्छे। इसलिए मैं तुझे भी खा जाता हूँ।” ऐसा कहते हुए वह मैदान में घास चरते हुए बछड़े को भी खा गया।

अब तो उसका पेट फूलकर सुराही से कड़ाही हो गया। और वह आगे बढ़ गया। जंगल में चलता गया, चलता गया तो उसे कौन मिला?

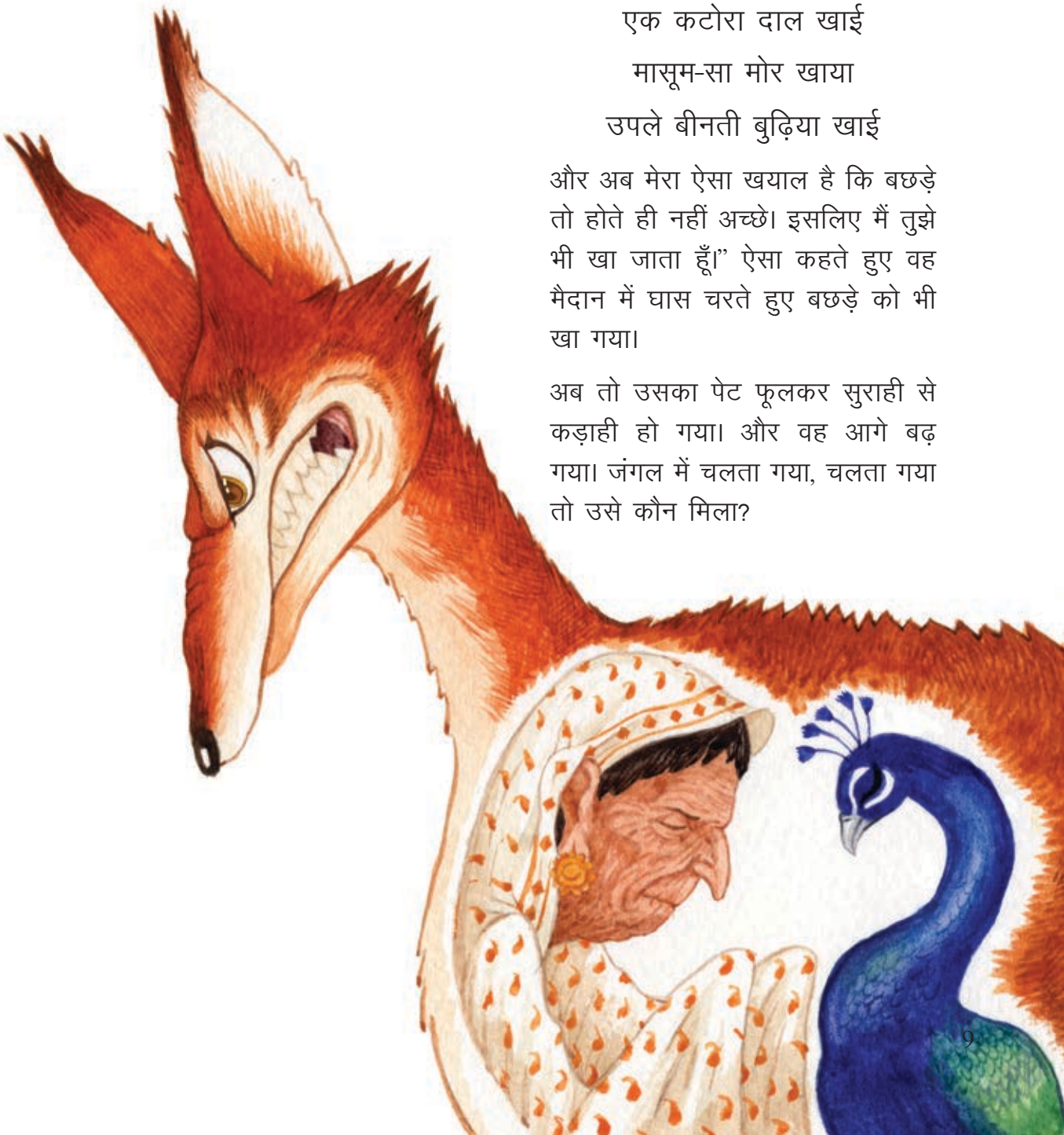

"भालू।"

बिलकुल ठीक। आगे उसे भालू मिला। भालू को देखते ही वह बोला –

"ऐ भालू,

मैं नहीं जानता तू कालू है या कालू का भाई चालू

हट जा मेरे रास्ते से।"

भालू ने कहा – "मैं तेरे रास्ते में कहाँ हूँ बल्कि तू तो खुद ही मेरे रास्ते में बढ़ा चला आ रहा है।"

सियार ने कहा – "तू शायद जानता नहीं है कि मैं कौन हूँ!"

भालू बोला –

"गीदड़ हो भाई तुम गीदड़
रोज़ शाम को दिल तुम्हारा
हो जाता है धुआँ-धुआँ
मिलकर रोते हो हुआँ-हुआँ।"

सियार ने कहा – “नहींऽऽऽ! अरे मैं वो हूँ जिसने-

बारह-बारह बाटी खाई

एक कटोरा दाल खाई

मासूम-सा मोर खाया

उपले बीनती बुढ़िया खाई

एक गाय का बछड़ा खाया

और तू बहुत कविता पढ़ रहा है इसलिए मैं तुझे भी खा जाता हूँ।” ऐसा कहकर वो उस भालू को भी खा गया।

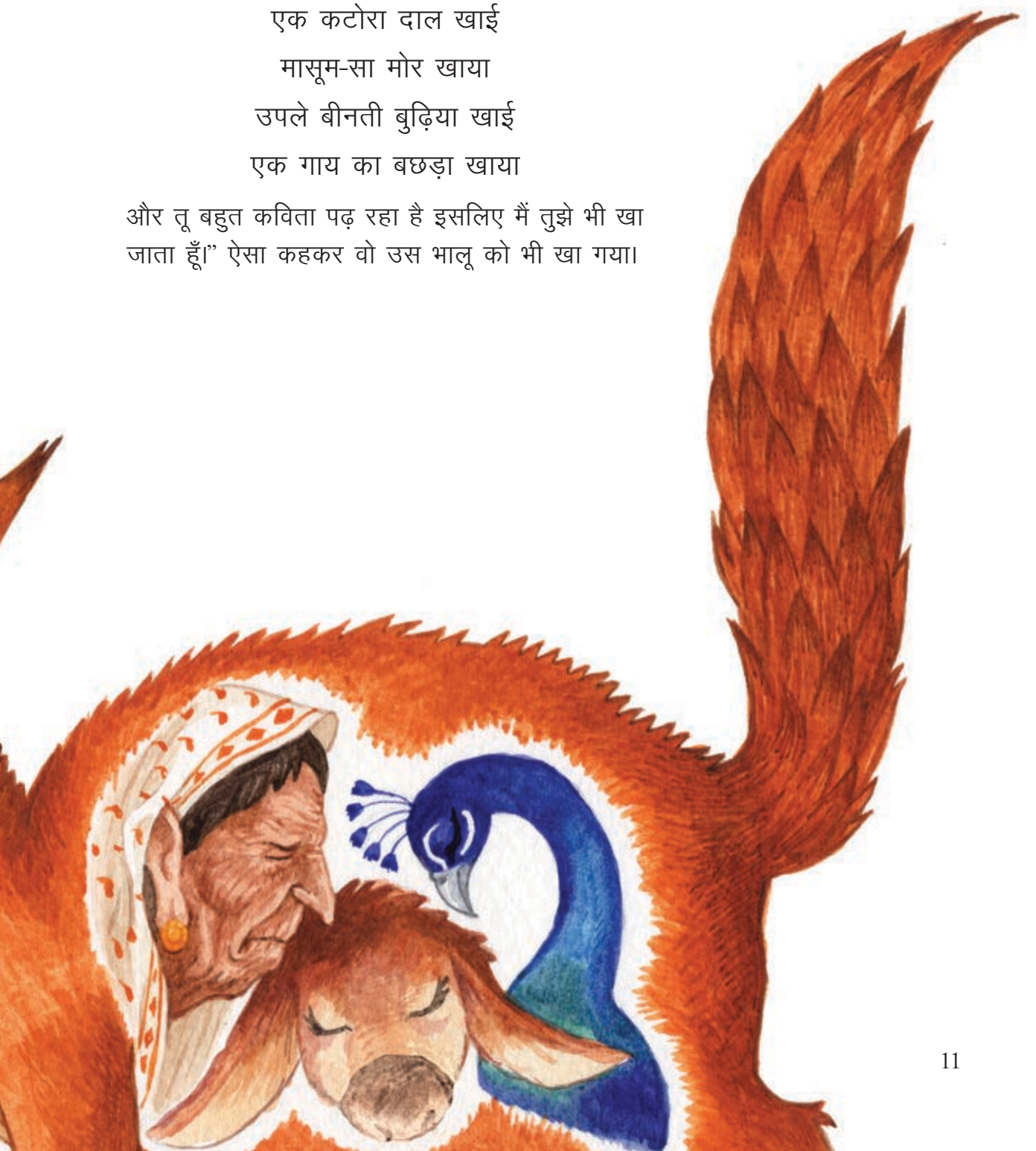

अब तो उसका पेट फूलकर ढोल हो गया। चलते-चलते वह हाथियों के जंगल में पहुँच गया। हाथी हरे बाँसों को चबा रहे थे और उनमें मस्ती कर रहे थे। उसने एक हाथी से कहा –

"ऐ हाथी

तू जिसका भी है साथी

मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

हाथी ने कहा – "बात क्या हुई?"

"बात ये हुई कि तू शायद जानता नहीं है कि मैं कौन हूँ!"

हाथी ने हँसते हुए कहा – "ये तो वही मिसाल हुई कि बोले तू कौन? बोले, मैं खामाखाँ। तो भैया तू खामाखाँ और कुछ भी नहीं। तू नहीं जानता कि तू हमारे सामने चींटी भी नहीं है।"

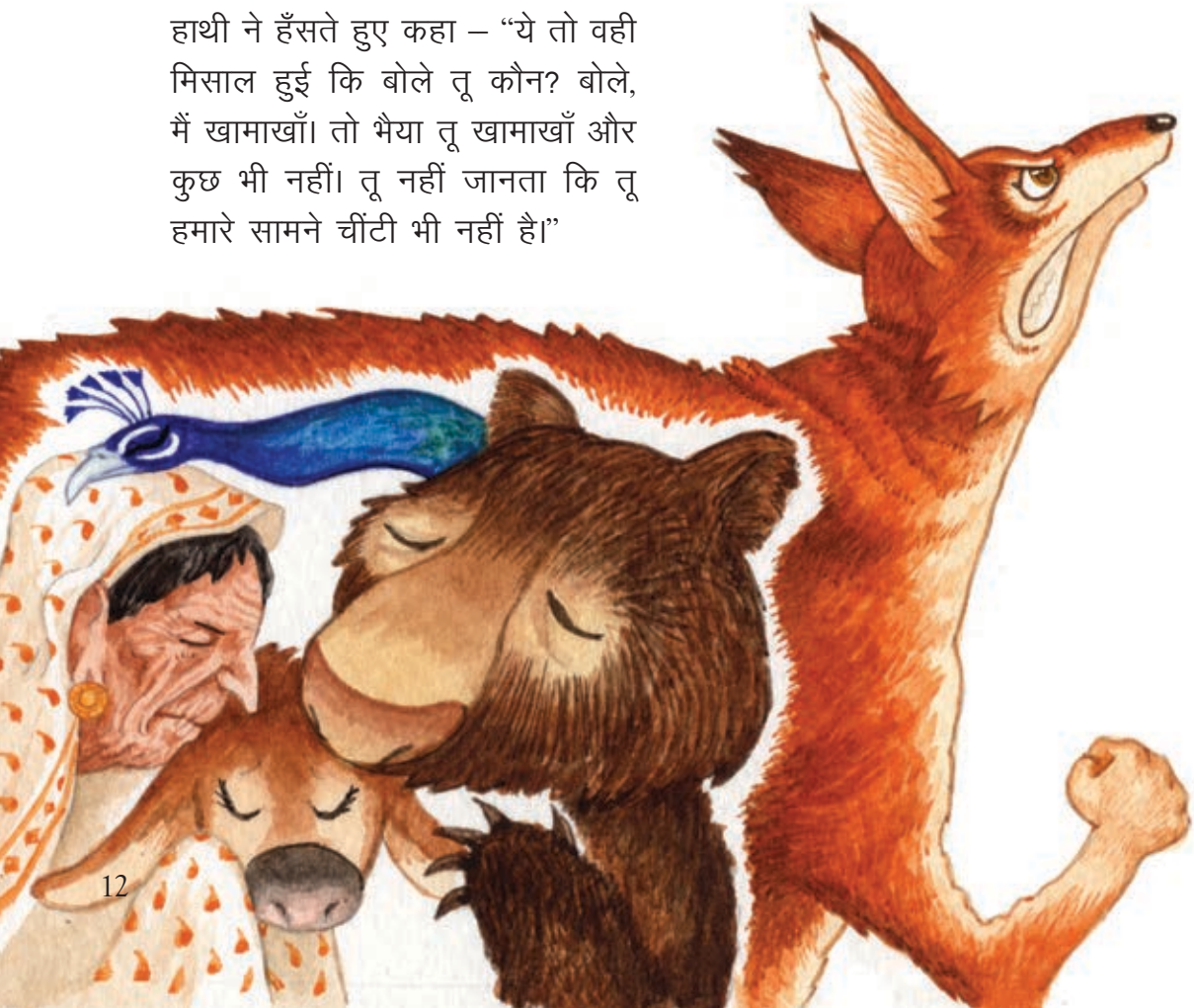

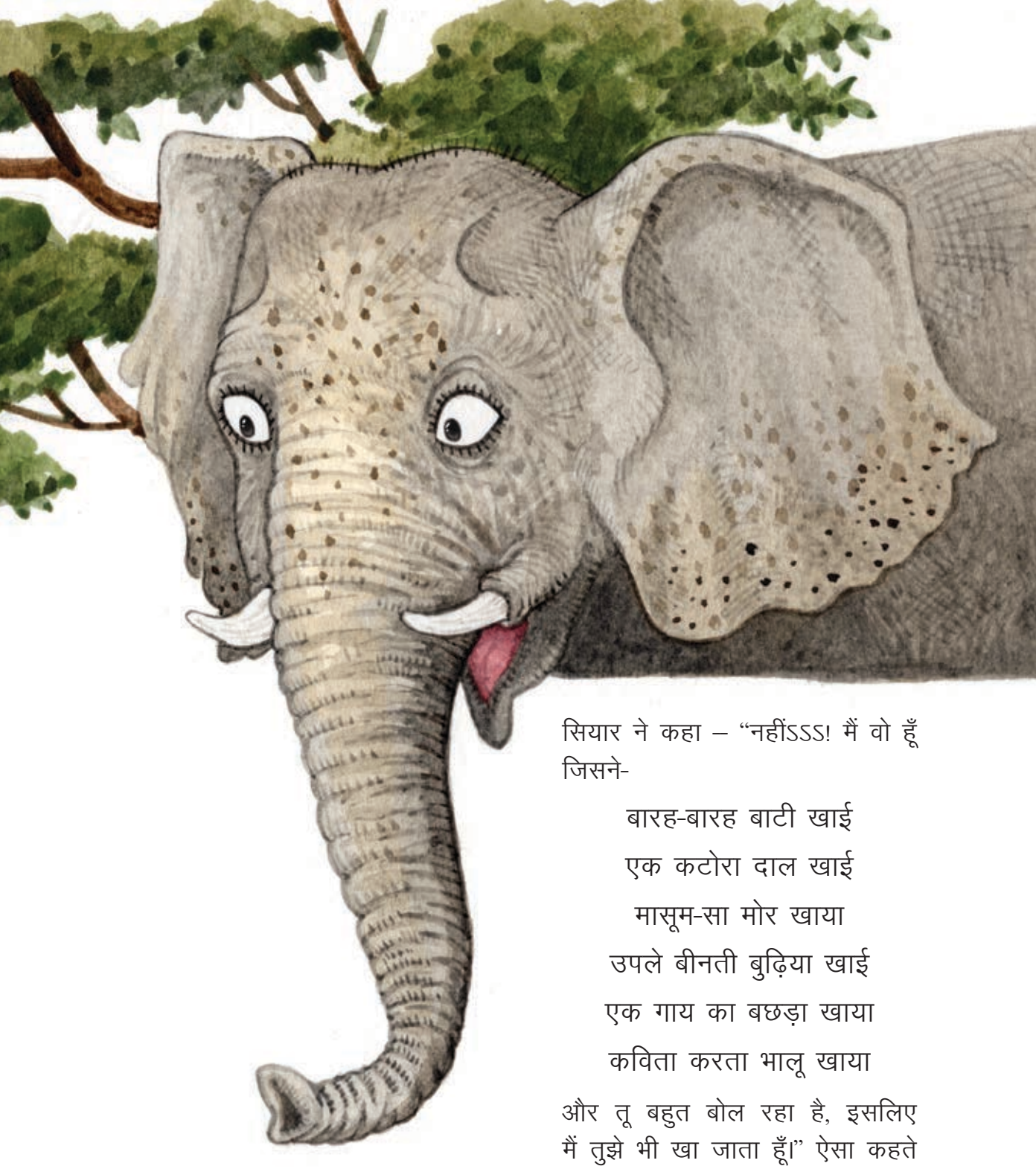

सियार ने कहा – “नहींऽऽऽ! मैं वो हूँ जिसने-

बारह-बारह बाटी खाई
एक कटोरा दाल खाई
मासूम-सा मोर खाया
उपले बीनती बुढ़िया खाई
एक गाय का बछड़ा खाया
कविता करता भालू खाया

और तू बहुत बोल रहा है, इसलिए मैं तुझे भी खा जाता हूँ।” ऐसा कहते हुए वो हाथी को भी खा गया। अब तो उसका पेट फूलकर पिंजरा हो गया।

आगे जंगल में अब मिलने को रहा ही कौन? शेर रह गया था सो वो भी मिल गया। शेर किसी शेर की तरह धीरे-धीरे कदम धरता इधर आ रहा था।

शेर को सामने से आता देखते ही सियार बोला –

“ऐ शेर

तेरे बिकवा दूँगा बेर।”

शेर ने कहा – “क्यों फड़फड़ा रहा है। एक पंजा मारूँगा तो तेरा पदड़का निकल जाएगा।”

सियार ने कहा – “तुझे अभी पता नहीं है शायद कि मैं कौन हूँ!”

“तेरे बारे में पता करके करना भी क्या है” कहते हुए शेर चलता रहा।

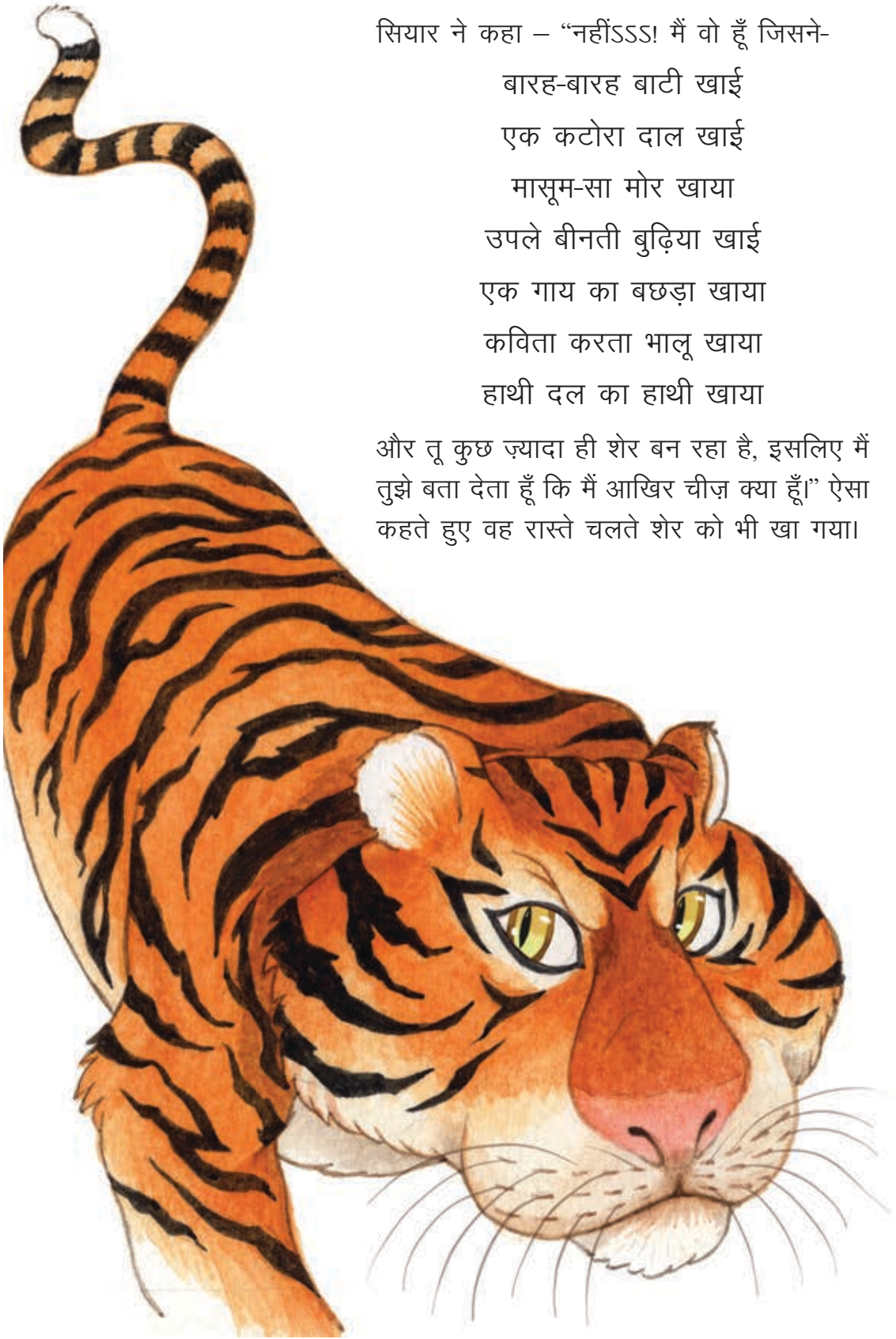

सियार ने कहा – “नहींऽऽऽ! मैं वो हूँ जिसने-

बारह-बारह बाटी खाई

एक कटोरा दाल खाई

मासूम-सा मोर खाया

उपले बीनती बुढ़िया खाई

एक गाय का बछड़ा खाया

कविता करता भालू खाया

हाथी दल का हाथी खाया

और तू कुछ ज़्यादा ही शेर बन रहा है, इसलिए मैं तुझे बता देता हूँ कि मैं आखिर चीज़ क्या हूँ।” ऐसा कहते हुए वह रास्ते चलते शेर को भी खा गया।

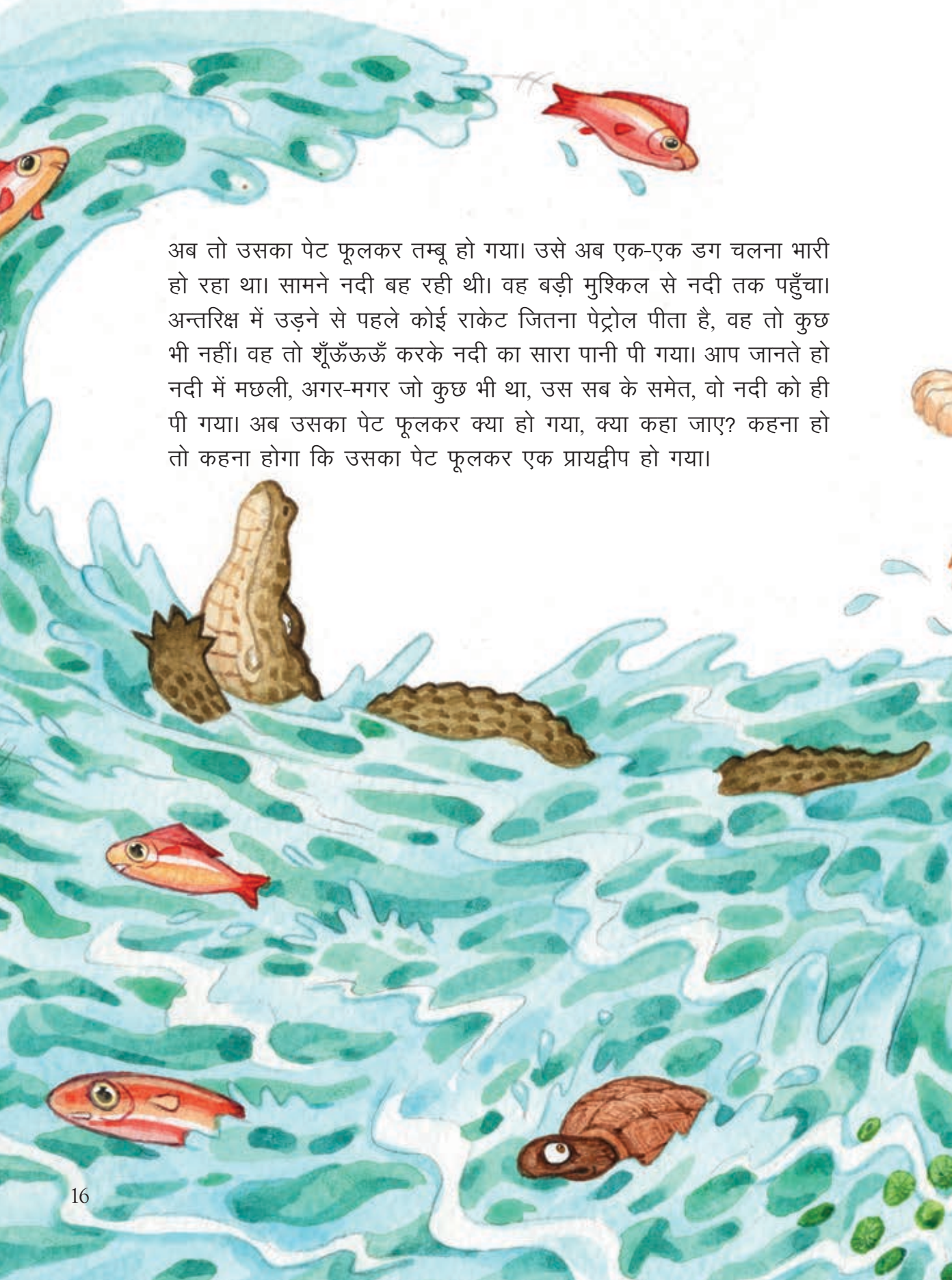

अब तो उसका पेट फूलकर तम्बू हो गया। उसे अब एक-एक डग चलना भारी हो रहा था। सामने नदी बह रही थी। वह बड़ी मुश्किल से नदी तक पहुँचा। अन्तरिक्ष में उड़ने से पहले कोई राकेट जितना पेट्रोल पीता है, वह तो कुछ भी नहीं। वह तो शूँऊँऊऊँ करके नदी का सारा पानी पी गया। आप जानते हो नदी में मछली, अगर-मगर जो कुछ भी था, उस सब के समेत, वो नदी को ही पी गया। अब उसका पेट फूलकर क्या हो गया, क्या कहा जाए? कहना हो तो कहना होगा कि उसका पेट फूलकर एक प्रायद्वीप हो गया।

वह दूर उन बादलों की छाया में जाकर सो जाना चाहता था। पर चले कौन? और चले तो चले कैसे? उसने मुड़कर एक डग ही भरा था कि मानो कोई भूकम्प आया हो। वह भड़भड़ाकर धरा पर धराशायी हो गया। उसका विशाल पेट फट गया। उसमें से सारी चीज़ें निकल-निकलकर अपनी-अपनी जगह भागीं। आप को तो पता है ही कौन-कौन भागा?

बारह-बारह बाटी भागी
एक कटोरा दाल भागी
मासूम-सा मोर भागा
उपले बीनती बुढ़िया भागी
एक गाय का बछड़ा भागा
कविता करता भालू भागा
हाथी दल का हाथी भागा
रास्ते चलता शेर भी भागा
नदी का सारा पानी भागा

अब अपना फटा पेट लिए सियार पड़ा था धरती पर। तभी कहीं से उड़ती हुई बुनकर चिड़िया आई। वह तिनकों से करती थी अपने घोंसले की सिलाई। सो वह सिलना जानती थी। उसने सोचा मैं बेचारे सियार का पेट भी सिल देती हूँ। उसने सियार का पेट सिल दिया।

सियार सिला हुआ पतला-सा पेट लेकर वापस खड़ा हो गया। अब उसे किसी मासूम मोर की तलाश थी जिसके साथ मिलकर वह खाना बना सके। वह फिर चल पड़ा और आगे उसे फिर से एक मासूम मोर मिल गया। फिर वही सब होने लगा।

दिन होता है, रात होती है, पर सियार की यह कहानी कभी खत्म नहीं होती है।

सियार और मोर की दोस्ती से
शुरू हुई यह कहानी,
जिसमें बुढ़िया, बछड़ा, भालू...
का सामना होता है सियार से।
और फिर
दिन होता है,
रात होती है,
पर सियार की यह कहानी
कभी खत्म नहीं होती है।

एकलव्य
मूल्य: ₹ 60.00
9 789385 236808
parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

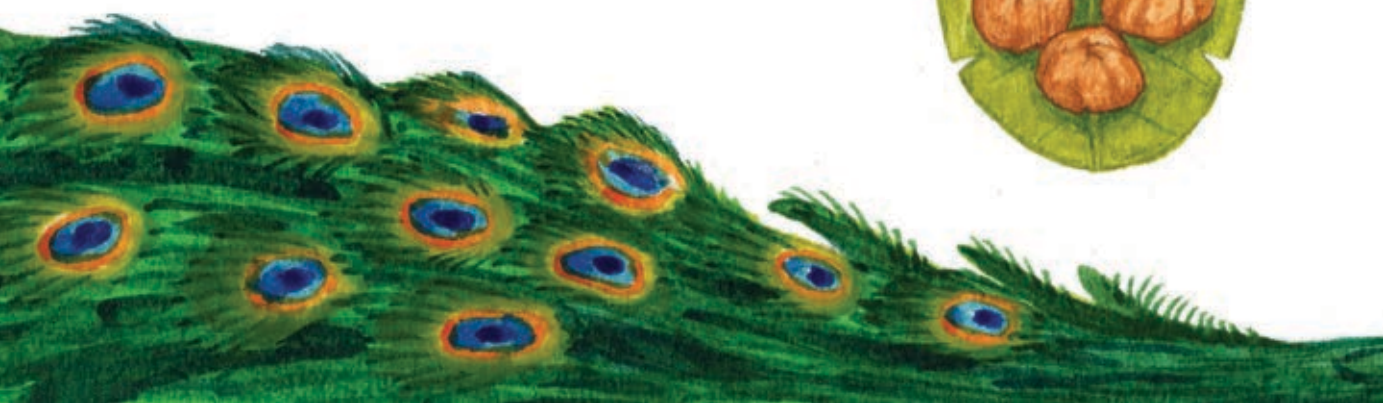

प्रभात

राजस्थान के करौली ज़िले के रायसना में जन्म। शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य। बच्चों के लिए गीत, कहानी, कविता, नाटक की बीस से अधिक किताबें प्रकाशित। युवा कविता समय सम्मान सन् 2012 और सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार सन् 2010।

मयूख घोष

कोलकाता में रहने वाले मयूख घोष को यात्रा करने का शौक है और इस दौरान उनकी स्केच बुक हमेशा उनके साथ होती है। मयूख ने महाराजा सायाजी राव यूनिवर्सिटी से विज़ुअल आर्ट्स में स्नातक और रियाज़ एकेडमी, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स किया है। वर्तमान में, रूम टू रीड, एनसीईआरटी, कराडी टेल्स और मनन बुक्स जैसे प्रकाशकों के साथ काम कर रहे हैं।